डॉ. पद्मा पाटील,
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।
तिथि 31 /12/2008

संस्तुति

मै. संस्तुति करती हूँ कि सु.श्री. अश्विनी रमेश काकडे द्वारा लिखित **''प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष 2003 की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन''** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि 31/12/2008

डॉ. पद्मा पाटील
Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University
Kolhapur-416004

डॉ. साताप्पा शामराव सावंत,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
विलिंग्डन महाविद्यालय,
सांगली।

प्र मा ण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सु.श्री. अश्विनी रमेश काकडे ने मेरे निर्देशन में **''प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष २००३ की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन''** लघु शोध - प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार संपन्न कार्य में शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है। शोध-छात्रा के कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि 31 **/12/2008**

शोध-निर्देशक

(डॉ. साताप्पा शामराव सावंत)
प्रमुख
हिंदी विभाग,
विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली.

प्र ख्या प न

''प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष २००३ की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन'' लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल (हिंदी) उपाधि के लिए लघु शोध-प्रबंध के रुप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्रा

(सु.श्री. अश्विनी रमेश काकडे)

स्थान : कोल्हापुर,

तिथि 31/12/2008

प्राक्कथन

कहानी मेरे अभिरुचि और अध्ययन का विषय रही है। 'हंस', 'कथा', 'कथाबिंब,' 'कथाकर्म ',' कथादेश' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों के कई अंकों को मैंने पढ़ डाला। जिससे हिंदी की पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों के प्रति मेरे मन में उत्सुकता बढ़ गई । एक बार मेरे पढ़ने में 'नया ज्ञानोदय' का अंक आया। जिसमें प्रकाशित कहानियों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। एक-एक करने के बाद मैंने 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कई कहानियों को पढ़ा। संयोगवश मैंने उस वर्ष एम. फिल् की कक्षा में प्रवेश लिया था। तब मुझे मालूम हुआ कि एम्.फिल्.के लिए लघु शोध-प्रबंध लिखना पड़ता है। वर्ष, २००३ की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों पर ही मैंने लघु शोध-प्रबंध लिखना पसंद किया। आदरणीय शोध-निर्देशक डॉ. साताप्पा सावंतजी से मैंने इस विषय के बारे में चर्चा की, तब उन्होंने इस विषय के बारे में चर्चा की, तब उन्होंने इस विषय पर मुझे मार्गदर्शन करने की स्वीकृति दी।

वर्ष, २००३ में 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में करीब ३४ कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आनंद की बात यह है कि, इस वर्ष ही 'नया ज्ञानोदय' का पुनर्प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसलिए मैंने शोध के लिए 'नया ज्ञानोदय' का प्रथम वर्ष चुना है। अत: मैंने ''प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष २००३ की नया ज्ञानोदय पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन।'' विषय एम.फिल्. लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन का विषय बनाया है।

'नया ज्ञानोदय' २१ वी शताब्दी की हिंदी की बहुचर्चित, लोकप्रिय, बहुआयामी, हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं का प्रतिनिधित्त्व करने वाली समसामायिक प्रश्नों को लेकर चलनेवाली पत्रिका रही हैं। प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में समाज के विभिन्न स्तरों

का वर्णन दिखाई देता है। अलग-अलग कहानीकारों द्वारा लिखित कहानियाँ सामाजिक धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि विविध विषयों संबंधित हैं।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न खडे थे।

१. युगीन परिस्थितियाँ कितने प्रकार की होती हैं ?

२. विवेच्य कहानियों की कथावस्तु क्या है ?

३. विवेच्य कहानियों के वर्गीकरण के आधार क्या है ? उनका वर्गीकरण किस प्रकार से किया जा सकता है ?

४. विवेच्य कहानियाँ तात्त्विक विवेचन के आधार पर किस प्रकार खरी उतरती है ?

५. विवेच्य कहानियों में कौन-कौनसी समस्याएँ नजर आती हैं ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर जानने तथा विषय विवेचन में सुसंगतता लाने हेतु मैंने आपने विषय को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय :- ''वर्ष, 2003 की 'परिस्थितियाँ' एवं 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका। '' में वर्ष,2003 की युगीन परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया हैं। जिसमें प्रमुख रुप से राजनीतिक , सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साहित्यिक, शैक्षिक, आदि का विवेचन दिया गया है। 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका के बारे में संक्षेप में जानकारी दी गई है। अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

द्वितीय अध्याय :- ''विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय'' में वर्ष, २००३ में 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित करीब ३४ कहानियों की कथावस्तु संक्षेप में दी गई हैं। जिसे पढ़कर विवेच्च कहानियों के वर्ण्य-विषय को समझा जा सकता हैं। अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

तृतीय अध्याय :- ''**विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण में**'' विषय के आधार पर कहानियों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। कहानियों का अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।''

चतुर्थ अध्याय :- ''**विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन** '' में कहानी के तत्त्वों आधार पर विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं ।

पंचम अध्याय :- ''विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ '' में समस्या अर्थ और परिभाषा देकर सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, धार्मिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है । अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

उपसंहार :- ''अंत में 'उपसंहार' दिया है। जिसके अंतर्गत सभी अध्यायों के निष्कर्षों को सार रुप में प्रस्तुत किया गया हैं । तत् पश्चात् परिशिष्ट तथा आधार ग्रंथ सूची, संदर्भ ग्रंथ सूची, पत्र-पत्रिकाओं की सूची प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :-

१. युगीन परिस्थितियाँ ने कहानी साहित्य को प्रभावित किया है।

२. विवेच्य कहानियों में विषय-वैविध्यता नजर आती हैं।

३. अलग-अलग कहानीकारों की अलग-अलग कहानियाँ समाज के विभिन्न वर्गोंसे ली गई है। जो अपने-अपने वर्ग की प्रतिनिधित्त्व करती है।

४. विवेच्य कहानीकारों ने विधवा समस्या, परित्यक्त समस्या, शरणार्थियों की समस्या, बलात्कार की समस्या परित्यक्ता की समस्या, दाम्पत्य जीवन में टूटन की समस्या, आदिवासी संस्कृति पर अतिक्रमण की समस्या, अविकसित बच्चों की समस्या आदि वर्तमान काल की समस्याओं की ओर गंभीरता के साथ देखा हैं।

५. विवेच्य कहानियों में पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, सीमित पात्रों संख्या, परिस्थिति के अनुकूल भाषा का प्रयोग, परिवेश के अनुकूल पात्रों का नामकरण आदि विशेषताएँ दिखाई देती है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला । उन सभी का आभार प्रकट करना मैं अपन कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य की संकल्प की पूर्ति शोध-निर्देशक डॉ. साताप्पा शामराव सावंत अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विलिंग्डन महाविद्यालय,सांगली के कृपापूर्ण मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का फल है।

हिंदी विभाग की अध्यक्ष, डॉ. पद्मा पाटील, डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ. शोभा निंबाळकर, विलिंग्डन महाविद्यालय के प्राचार्य निर्मळे जी, सहकारभूषण एस् के पाटिल,महाविद्यालय के प्राचार्य महाडिक जी, उपप्राचार्य प्रा. बी.जी. भोसले जी, भूतपूर्व प्राचार्य,आर.एस. पाटील जी डॉ. एस् व्ही. मुद्गल इन सभी की मैं ऋणी हूँ। जिन्होंने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन कर इस कार्य को पूरा करने में मेरी सहायता की है।

मेरे जीवन का कोई भी कार्य प्रात: स्मरणीय माता-पिता और भाई महेश के बिना संपन्न नहीं हुआ है। इन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि, मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुई हूँ। आज मैं जो भी कुछ हूँ, उन्हीं की बदौलत हूँ। अत: इनका आभार मानकर मैं इनके ऋण से मुक्त नहीं होना चाहती हूँ। क्योंकि ऋण तो गैरों का चुकाया जाता है, अपनों का नहीं।

मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित कनेवालों में मा. चिमासाहेब जगदाळे, प्रा. दिलीप पवार, प्रा. वाय.एम. चव्हाण, प्रा. सावंत, प्रा. माळकर, अनिता सावंत और मेरी सहेलियाँ तथा सहकार भूषण एस्. के पाटिल,महाविद्यालय का गुरुजन वर्ग इनके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को संपन्न करने में निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा हैं।

१. बॅरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

२. विलिंग्डन महाविद्यालय, सांगली।

३. मा. चिमासाहेब जगदाळे ग्रंथालय,सहकार भूषण एस.के. पाटील महाविद्यालय, कुरुंदवाड।

४. "दैनिक सकाल"ग्रंथालय, कोल्हापुर।

५. सांगली जिला नगर वाचनालय, सांगली।

६. डॉ. बलवंत जेऊरकर ग्रंथ संचयन, सांगली।

इन ग्रंथालयों के प्रमुख एवं कर्मचारियों की मैं हृदय से आभारी हूँ। डॉ. बलवंत जेऊरकर जी का निजी ग्रंथ संचयन मेरे लिए हमेशा खुला रहता था। उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। मैं उन कृतिचारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। जिनके सृजनात्मक एवं वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस लघु शोध-कार्य में किया है।

इस लघु शोध-प्रबंध का टंकलेखन अशोक टायपिंग ब्युरो की ओर से श्री कोरडे ने उत्तम और बडी तत्परता से किया। इसलिए मैं उनके प्रति आभारप्रकट करती हूँ। अंत में सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। जिन्होंने जाने-अनजाने में ही सही इस लघु शोध-कार्य में सहायता की है। इन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर विनम्रता से विद्वानों के सामने मैं अपने लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

(सु.श्री. अश्विनी रमेश काकडे)